जीवन को खंडित होने से बचाए...

-ब्र.कु.गंगाधर

आपने वे व्यक्ति को देखा? माई गॉड! कैसा था उनका चेहरा! एक मित्र, दूसरे मित्र को कह रहा था।

दूसरे दिन फिर वे व्यक्ति उसी मित्र को मिल गया। उनका प्रसन्न चेहरा देख दूसरे दिन मित्र को उसने कहा - वे व्यक्ति जो कल मिले था वे व्यक्ति को देखा? कैसा सुंदर चेहरा था उनका! मैं तो उनको देख खुशहाल हो गया! एक ही व्यक्ति एक ही दिन में चौबीस घण्टें में दो अभिप्राय दे रहा था, यह देख वे मित्र भौंचका हो गया।

वास्तव में, वह मित्र पहले दिन उनकी पत्नी के साथ बहुत झगड़ा करके आया था। पत्नी ने उनहें 'राक्षस' जैसा पति कहा था और 'राक्षस' शब्द उनके मन पर इतना पकड़ जमा लिया था कि कोई भी अनजान व्यक्ति उसे 'राक्षस' जैसा दिखाई देता था। उनकी पत्नी से बोलते वक्त ज्यादा कड़वे शब्द का प्रयोग हो गया था, पीछे से उन्हें खुब पश्चाताप हुआ। पत्नी ने मन ही मन पति से माफी मांगी। उसके लिए सुंदर भोजन बनाया। वे व्यक्ति वापिस घर पहुंचा तब पत्नी ने उसे पैर छूकर क्षमा मांगी। प्रेम से भोजन कराया। अतित के मीठे पलों को आदान-प्रदान किया। और वे व्यक्ति खुश हो गया।

दूसरे दिन वे व्यक्ति प्रसन्न व हल्का था कि जो कल उसे अनजान व्यक्ति जो 'राक्षस' जैसा दिखता था, वे आज सुंदर और प्रसन्नकारक लगने लगा।

जिंदगी में दृष्टिकोण का महत्व है। शुभ दृष्टि महक फैलाती है, और अशुभ या दु:खग्रस्त दृष्टि मन को दूषित करती है। जगत कभी नहीं होता अत्यंत खराब या बहुत निंदनीय, अपनी दृष्टि के अनुरूप ही हम जगत को खराब और सुंदर मानते हैं।

आँख के मोतिया से बुद्धि का मोतिया ज्यादा नुकसानकारक है। नकारात्मकता के बीज बोने वालों को सकारात्मकता के मीठे फल की आश कैसे रख सकते?

यहां एक साहु की 'दृष्टिकोण का अंतर' बोधकथा का उल्लेख करने जैसा है। एक गांव के अंदर एक कांच का 'शीश महल' निर्मित था। उस महल की दीवारों पर सैंकड़ों कांच जड़े हुए थे। एक दिन एक व्यक्ति वहां पहुंच गया। महल में प्रवेश करने का विचार किया।

डरते-डरते उसने शीश महल का मुख्य द्वार खोला और कांच में देखने का प्रयत्न किया वहीं उसे सैकड़ों परेशान और नाराज आदमी दिखें। ऐसा देख वे व्यक्ति गुस्से से चिल्लाने लगा।

बाहर निकलने के बाद थोड़ा समय राहत का श्वांस लेकर उसने विचार किया कि शीश महल से ज्यादा खराब जगह इस दुनिया में कहां भी हो नहीं सकती। इसके अंदर कितने मार-धाड़ करने वाले लोग हैं! ऐसी जगह पर वह कभी भी नहीं आयेगा।

उस बात को कितने दिन बीत गये। उसी गांव में एक दूसरा व्यक्ति आ पहुंचा, गांव में घुमते-घुमते वे शीश महल पहुंचा। वे व्यक्ति खुशमिजाज और जिंदादिल वाला था। महल को देख उसके मन में देखने की जिज्ञासा हुई और मुख्य द्वार खोलकर अंदर की ओर देखने लगा।

वे व्यक्ति को आश्चर्य हुआ। शीश महल के कांच में अनेक हसंमुख चेहरे दिखाई दे रहा था। वे आत्मविश्वास पूर्वक आगे बढ़ा सैकड़ों प्रसन्न चेहरों यानी मैत्रीभाव दर्शाता हुआ दिखाई दिया। वे व्यक्ति आनंदित हो गया।

शीश महल से वह बाहर आया तो उसे विश्व का सबसे श्रेष्ठ सुंदर स्थान लगा। उस दिन का अनुभव को वे सबके उत्तम अनुभव मानने लगा और फिर-फिर वहां आने का संकल्प के साथ विदाई हुआ।

सार रूप में देखें तो यह संसार ही कांच का महल है यानी की शीश महल समान है। उसमें व्यक्ति के विचारों के अनुरूप प्रतिक्रिया दिखाई पड़ती है।

जो लोग संसार को आनंद बाजार मानते हैं, वे यहां से प्रत्येक प्रकार का सुख और आनंद का अनुभव लेकर जाते हैं और जो व्यक्ति संसार को दु:खों का कारागार समझते हैं उनके झोली में दु:ख और अशांति के शिवा दूसरा कोई बचता ही नहीं।

अपना समग्र ध्यान भौतिक उपलब्धि और सुख संचय करने में केंद्रित है।

सारे ही हमारे अनुरूप मिले ऐसी आशा रख हम जीते हैं। परिणाम स्वरूप जब अपनी धारणा से विपरीत होता है तब अपने बोल, वाणी, व्यवहार, सब नकारात्मक और प्रदूषित हो जाते हैं। मनुष्य को चिंता को पालने में बहुत मजा आता है इसलिए चिंतन के आनंद को वे खत्म कर देता है। मनुष्य को सब करने को आता है लेकिन अन्तर यात्रा करना नहीं आता। इसलिए उनमें दु:ख और भय है। मनुष्य खुद पर अत्याचार इतना करता है जितना कोई शत्रु भी नहीं कर सकता। मनुष्य होठ पर विश्वास बढ़ाने के बदले दिल पर विश्वास बढ़ाए तो बेड़ा पार हो जाये।

- शेष पृष्ठ 5 पर

योगी वो जो स्नेह से सहयोगी बनायें

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

योगी वो जो हरेक को सहयोगी बनाये। सहयोगी बनायेगा स्नेह से। ऐसे नहीं बनेगा। डायमण्ड हॉल तक कैसे पहुंचे हो, कोआपरेशन से। और बातों में मत जाओ, दिमाग खाली करो और दिल को सच्चा बनाओ। कोई अभिमान नहीं रखो, मैंने किया... शान्त रहो, आपकी राय अच्छी है, अच्छा होगा। बाकी मैंने बोला यह होना चाहिए, यह नहीं हो। बाबा कहते हैं अभी मेरा बच्चा हो तो फरिश्ता बन जाओ, साधारण बी.के. नहीं। बी.के. तो लाखों हैं। इतने अच्छे हो जो बाबा दिलतख्त पर बिठा देवे। जो चाहे जैसे चाहे वैसे करा ले। मैं तो बस खेल देखती हूँ बाकी वो करा लेता है। वण्डर है ड्रामा का, हर सीन देखो, हर सीन अच्छी है। कौन अच्छा नहीं है, मुझे बताओ। बाबा को अपना नाम बाला करना है। तुम निश्चिंत रहो। ईश्वर के हाथों से पालना मिले, यह कितनी कमाल की बात है। सदा ही ईश्वर के आगे, एक दो के आगे बात को स्वीकार करो। किसी के लिए भी कोई बात अपने अन्दर रखा तो आप स्वमान में रह नहीं सकेंगे। किसने कहा देख, किसने कहा सुन! इतना सम्भालो जो सिद्ध न करना पड़े कि यह आंखो देखी बात है। हम जैसा देखेंगी सुनेंगी उतना ही औरों को पावरफुल वायब्रेशन पहुंचेंगे। सच्ची भावना काम करेगी। अगर कोई कहे हम इतने दिन से देखती हूँ यह नहीं सुधरता है, यह शब्द मुख से निकले - यह भी अभिमान है। वो कभी फरिश्ता बनेगा ही नहीं, ब्राह्मण भी नहीं बनेगा। ब्राह्मण सबका कल्याणकारी होता है, ब्राह्मण मरे हुओं का भी कल्याण करने वाला होता है। पहले ब्राह्मण तो बनो जो बाबा देखे कि जैसा मेरा मुख है वैसा मेरे बच्चे का मुख है। पास्ट प्रेजेन्ट अच्छा है फ्यूचर बहुत ही अच्छा है। पास्ट को अपने वाणी में कर्म में बिल्कुल यूज नहीं करो। जो भी कोई कमी है, कमजोरी है उसे आज ही खलास कर दो। फिर देखो प्रभू लीला। जो खुद कुछ मेहनत नहीं किया पर रियलाइज किया तो बाबा परिवर्तन करा लेगा। कैसे किया जाये, यह सोचना इजी नहीं पर प्रैक्टिकल रियलाइज करने से इजी है। मैं को अन्दर से खत्म करो। मैंने किया तो अभिमान, मुझे करना है तो बोझ। अभिमान स्नेही बनने नहीं देता, ना ही सहयोगी बनने देता है। मैं फ्री रहूँ, बाबा कर रहा है, स्नेह से सहयोगी बना रहा है। प्रैक्टिकल प्रूफ है, प्रूफ देखकर भी कोई नहीं सुधरे तो कोई क्या कर सकता है। मुझे करना है, यह करना है तो माथा खराब हो जायेगा। समय नाजुक है - परन्तु सुधरेंगे तो बाबा का हाथ सरमाथे पर है, सबका सहयोग है। फिर खुशनुमा, खुशमिजाज, खुशकिस्मत बन जायेंगे। इससे कई आत्माओं का उद्धार आपके निमित्त बनने से हो जायेगा। उसके लिए उमंग-उत्साह चाहिए। मैं हूँ आत्मा, मेरा है बाबा, मीठा है ड्रामा। आत्मा कहती है शान्ति से रहो। परमात्मा आत्मा को कहता है शान्त में रहो। जो मैं बोल रही हूँ, कोई कॉमेन्ट्री नहीं करा रही हूँ। मैं अपने आपको कैसे चलाती हूँ, उस अनुभव की लेन-देन करती हूँ, वो मेरे से प्यार और शक्ति लो, आपस में ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न बनके। ईश्वरीय परिवार को यह भान होवे, भासना आये। बोला फिर शान्त। मैं यह राय देती हूँ, आप ऐसी प्रैक्टिकली देह सम्बन्ध दुनिया जानते ही नहीं है हम। ऐसे खुशबूदार बाबा के फूल बनो। जीवन यात्रा है, हम सब यात्रा पर हैं। जाना है घर, पर बाबा ले जाने वाला न हो तो कैसे जायेंगे। बाबा यहाँ आया है हमको पतित से पावन बनाके साथ ले जाने के लिए। यात्रा पर देखना नहीं होता है कौन आया या नहीं आया। बाबा भी पीछे नहीं देखता है, हाँ कल्प पहले आये थे। कभी बाबा किसी की लौकिक बात पूछता नहीं, न सुनता था। बाबा के पास आया माना बाबा का बच्चा है। बाबा का लौकिक कभी बाबा के सामने लौकिक बात नहीं करता था। हरेक का कर्म अपना है। कभी भी बाबा ने एक सेकण्ड भी लौकिक का नाम भी नहीं लिया होगा। हाँ यह सब मेरे बच्चे हैं। जो बाबा बार-बार कहता है कि भले रहो प्रवृत्ति में, पर यह सब बाबा का है, मेरे हैं यह नाम खत्म।

संगम का समय व्यर्थ न गवाएं

दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

यह जो संगम का समय है - यह सबसे बड़ा खजाना है क्योंकि कोई भी प्राप्ति, कोई भी कर्म समय अनुसार ही होती है। सुबह से लेकर हमारी जो भी दिनचर्या चलती है, वो समय के आधार पर चलती है। तो अगर समय के खजाने को सही रीति से विधिपूर्वक हम कार्य में लगाते हैं, तो हमारा सारे कल्प का भविष्य निश्चित हो ही जाता है क्योंकि यह संगम का समय का एक सेकण्ड 5 हजार वर्ष की प्रालब्ध का आधार है और कोई भी युग में हमारी प्रालब्ध नहीं बन सकती है। यही संगम का समय है जिसमें हमारी चढ़ती कला होती है। तो संगम समय पर राज्य-अधिकारी बनने से भविष्य में भी राज्य अधिकार निश्चित है ही फिर भक्तिकाल में पूज्य भी जरूर बनना ही है। भले द्वापर से गिरना शुरू करते हैं लेकिन हमारा पूज्य रूप तो कायम होता है। हम सब पूज्य जरूर बनने वाले हैं लेकिन जैसे यहां पुरुषार्थ में नम्बर हैं वैसे पूज्य में भी नम्बर है।

किसी-किसी बड़े-बड़े मंदिरों में रोज हर कर्म का यादगार पूज्य के रूप में विधिपूर्वक पूजा जाता है और कहीं-कहीं ऐसा नहीं होता है। मंदिरों में भी फर्क है। यह सारा फर्क इस संगम समय के पुरुषार्थ और प्राप्ति के ऊपर है। हमको देखना है कि सबसे बड़ा खजाना का आधार जो समय का खजाना है उसको हम कितना और कैसे यूज करते हैं? क्योंकि बाबा का है कि अब नहीं तो कब नहीं का पाठ पक्का करना है। एक सेकण्ड में कुछ भी हो सकता है, अचानक होगा तब तो माला में नम्बरवार होंगे। तो अचानक होना है, उसके कारण बाबा कहता है - संगम के एक-एक सेकण्ड का अटेंशन हो। ऐसे ही साधारण रूप में इसे न गंवायें। समय का बहुत ध्यान रखना है इसके लिए अटेंशन बहुत रखना पड़ेगा। ऐसे ही साधारण रीति से हमारा दिन बीता तो वहां भी साधारण ही बनना पड़ेगा। तो अपनी लगन में मगन और अपनी कमाई जमा करने में मस्त रहें। ज्ञान माना यह नहीं कि सिर्फ हमने समझ लिया फिर भी बाबा कहते ज्ञानी तो बने लेकिन अभी पॉवरफुल नहीं बने हैं। बाबा से प्यार का सर्टिफिकेट तो हम सबने ले लिया, प्यार नहीं होता तो छोड़के आते क्यों? इसलिए प्यार में तो पास हैं। हम कोर्स करा सकते हैं, बड़ी-बड़ी जगहों पर भाषण कर सकते हैं, बुद्धि में सारी नॉलेज है रचता और रचना की, लेकिन ज्ञान माना समझ। ज्ञान का अर्थ ही है समझ। तो समझ सिर्फ बोलना, ज्ञान वर्णन करना नहीं है। समझ हर कर्म में चाहिए, मानो हम संकल्प करते हैं उसमें भी समझ चाहिए - राइट है या रांग है। हम फालतू को ही बढ़ाते रहते हैं, तो यह ज्ञान है क्या? समझ है क्या? सोच-समझ के काम करना है इसको कहते हैं ज्ञानी तू आत्मा। ज्ञान, गुण और शक्तियां... इसके लिए भी बाबा ने खास यह इशारा दिया है कि समय अनुसार, समस्या अनुसार जिस शक्ति की आवश्यकता है वो काम में आ जावे। तो ज्ञानी माना हर संकल्प, हर कर्म सोच समझकर करें। अगर समझ के आधार पर हम काम करेंगे तो हमारे कर्म कभी भी विकर्म नहीं होंगे, सुकर्म ही होते रहेंगे। ऐसे ही योग की शक्ति के स्वरूप का भी चेक करना चाहिए कि जब भी हम योग में बैठते हैं तो हमारा मन उसमें एकाग्रचित होना चाहिए। ये चेक करने की बात है क्योंकि एकाग्रता हमारे योग की विशेषता है। जब और जहां हम अपने मन को लगाने चाहें, जितना समय हम मन को जिस स्टेज में ठहराने चाहें उसमें ठहरा सकें जिसको हम कहते हैं कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर। जिस समय जो लक्ष्य लेके बैठो तो जैसा वक्त वैसा काम होना चाहिए अर्थात् पढ़ने के समय पढ़ाई पढ़ो, खेलने के समय खेल खेलो। तो यह भी हमें चेक करना है कि योग माना मन एकाग्र हो। और हमारा मन जितना एकाग्र रहता है उसमें विशेष प्राप्ति यह होती है कि हमारा निर्णय बहुत अच्छा होता है।